नईदुनिया

तालिबान को अब समझ में आया शिक्षा का महत्व, बोला-लड़कियों के लिए खोलेंगे स्कूल

काबुल

लंबे समय बाद तालिबान को शिक्षा का महत्व पता चला है। शायद यही वजह है कि उसने अब महिलाओं और लड़कियों को शिक्षित करने का मन बना लिया है और स्कूल खोलने का निर्णय लिया है। तालिबान के कार्यवाहक उप विदेश मंत्री ने अफगान लड़कियों के लिए स्कूल खोले जाने की अपील की है। यह टिप्पणी हाल के वर्षों में किसी तालिबान अधिकारी की तरफ से देश में महिला शिक्षा पर प्रतिबंध की सबसे कड़ी सार्वजनिक आलोचनाओं में से एक है। लड़कियों की शिक्षा पर पाबंदी एक ऐसी नीति है जिसने तालिबान को दुनियाभर से अलग-थलग कर दिया।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक शेर मोहम्मद अब्बास स्तानेकजई ने वीकेंड में एक भाषण में कहा कि लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा पर प्रतिबंध इस्लामी शरिया कानून के अनुरूप नहीं है।

स्थानीय मीडिया के अनुसार, मंत्री ने तालिबान के प्रशासन के नाम का जिक्र करते हुए कहा, हम इस्लामिक अमीरात के नेताओं से शिक्षा के दरवाजे खोलने का अनुरोध करते हैं। उन्होंने कहा, पैगंबर मुहम्मद के समय में ज्ञान के दरवाजे पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए खुले थे।

कार्यवाहक उप विदेश मंत्री ने अफगानिस्तान की महिला आबादी का जिक्र करते हुए कहा, आज, चालीस करोड़ की आबादी में से हम बीस करोड़ लोगों के खिलाफ अन्याय कर रहे हैं।तालिबान का दावा है कि वे इस्लामी कानून और अफगान संस्कृति की अपनी व्याख्या के अनुसार महिलाओं के अधिकारों का सम्मान करते हैं।

हालांकि उन्होंने 2022 में लड़कियों के लिए हाई स्कूल खोलने के वादे पर यू-टर्न लिया। 2022 के अंत में महिला छात्रों के लिए विश्वविद्यालयों को बंद कर दिया। तालिबान प्रशासन तब से कहता रहा है कि वह स्कूलों को फिर से खोलने की योजना पर काम कर रहा है, लेकिन उसने कोई समयसीमा नहीं बताई है।

न्यूज ब्रीफ

कराची विश्वविद्यालय ने स्टूडेंट्स के लिए ड्रेस कोड लागू किया

कराची। कराची विश्वविद्यालय ने स्टूडेंट्स के लिए नया ड्रेस कोड लागू किया है। विश्वविद्यालयों के दिशा-निर्देशों में कहा गया है कि कैंपस में सम्मानजनक और विनम्र उपस्थिति के महत्व का ध्यान रखा जाए। कराची विश्वविद्यालय पाकिस्तान के सबसे बड़े विश्वविद्यालयों में से एक है। यहां 45,000 से अधिक विद्यार्थी नामांकित हैं। जियो न्यूज के अनुसार, स्टूडेंट्स ड्रेस कोड की अधिसूचना विश्वविद्यालय के अधिकारी डॉ. नोशीन रजा ने 14 जनवरी को जारी की। इसमें विद्यार्थियों को शालीन लिबास पहनने के लिए आगाह किया गया है। ऐसे परिधानों को पहनने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है, जिन पर नजर पड़ने से जिनसे ध्यान भटके। मसलन स्टूडेंड्स के पारदर्शी, शॉर्ट्स, स्लीवलेस या टाइट-फिटिंग कपड़े पहनने पर रोक लगा दी गई। डॉ. नोशीन रजा ने कहा कि विश्वविद्यालय में नया शैक्षणिक वर्ष शुरू हो गया है। नए छात्रों को विश्वविद्यालय के ड्रेस कोड के बारे में जागरूक करने के लिए यह अधिसूचना जारी की गई है।

ताइवान में भूकंप का कहरः 6.4 तीव्रता से धरती कांपी, 27 घायल, अलर्ट

ताइपे। ताइवान में मंगलवार देर रात आए 6.4 तीव्रता के भूकंप ने बड़े पैमाने पर दहशत फैला दी। भूकंप के कारण 27 लोग घायल हो गए हैं, और एक इमारत के जमींदोज होने से कई लोग मलबे में फंस गए। भूकंप आने के बाद कहा गया है कि ताइवान की 2.34 करोड़ की आबादी पर बड़ा खतरा मंडरा रहा है। दरअसल अधिकारियों ने सुनामी का अलर्ट जारी कर समुद्र किनारे रहने वाले लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी है। ताइवान में भूकंप मंगलवार रात 12:17 बजे आया, जबकि अधिकांश लोग गहरी नींद में थे। भूकंप का केंद्र ताइवान के युजिंग से 12 किलोमीटर उत्तर में बताया गया है। ताइनान के नानक्सी जिले में एक इमारत पूरी तरह जमीदोज हो गई, जिसमें कई लोग फंस गए। ताइवान के स्टेट हाईवे पर बना झूवेई पुल भी क्षतिग्रस्त हो गया। राजधानी ताइपे समेत देश के अन्य हिस्सों में भी झटके महसूस किए गए। ताइवान के फायर डिपार्टमेंट ने तेजी से राहत कार्य शुरू कर दिया है। भूकंप के कारण 27 घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वहीं जमीदोज इमारत में फंसे लोगों को बाहर निकालने के प्रयास जारी हैं। मलवा हटाने का काम युद्ध स्तर पर किया जा रहा है। ताइवान में भूकंप के समय भारत के लेह क्षेत्र में भी 4.5 तीव्रता के झटके महसूस किए गए। हालांकि, यहां कोई जान-माल का नुकसान नहीं हुआ। वहीं तिब्बत में रात 12 बजे से सुबह 11 बजे तक पांच बार भूकंप के झटके आए, जिनकी तीव्रता 5 तक मापी गई है।

ट्रंप सरकार का बदलाव :अब विवेक रामास्वामी को मिलेगी नई जिम्मेदारी

वाशिंगटन। ट्रंप-वैन्स ट्रांजिशन की प्रवक्ता एना केली ने कहा, विवेक रामास्वामी ने डीओजीई की स्थापना में

अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने बताया कि गवर्नर चुनाव में उतरने की इच्छा के चलते विवेक ने इस कमेटी से अलग होने का फैसला किया है। केली ने कहा, उनकी योजना जल्द ही चुनाव लड़ने की है, जिसके कारण उन्हें डीओजीई से बाहर रहना होगा। हम उनके योगदान के लिए दिल से धन्यवाद देते हैं और उम्मीद करते हैं कि वे अमेरिका को महान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। डीओजीई से अलग होने के बाद रामास्वामी ने इसका हिस्सा बने रहने के लिए सम्मान बताया और अपने राजनीतिक भविष्य को लेकर जल्द घोषणा करने की बात कही। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा, डीओजीई की स्थापना में सहयोग करना मेरे लिए सम्मान की बात थी। मुझे भरोसा है कि एलन और उनकी टीम सरकार को बेहतर बनाने में सफल होंगे। उन्होंने आगे कहा, मैं ओहायो में भविष्य की योजनाओं पर जल्द ही कुछ और साझा करूंगा। सबसे महत्वपूर्ण बात, राष्ट्रपति ट्रंप के साथ मिलकर अमेरिका को महान बनाने के लिए हम पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं।रामास्वामी और स्पेसएक्स व टेस्ला के सीईओ एलन मस्क को पिछले नवंबर में राष्ट्रपति ट्रंप ने एक नई पहल का नेतृत्व करने के लिए चुना था। इस पहल का मकसद व्हाइट हाउस और उसके प्रबंधन व बजट कार्यालय के साथ मिलकर काम करना है। 39 वर्षीय रामास्वामी पहले रिपब्लिकन राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार रह चुके हैं।

ट्रंप ने 6 जनवरी के कैपिटल दंगों में शामिल 1500 लोगों को माफी दी

वाशिंगटन

अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप सोमवार को शपथ लेने के बाद सबसे पहले अपने ओवल ऑफिस पहुंचे। उन्होंने कठोर रुख अपनाते हुए पूर्ववर्ती बाइडन प्रशासन के 78 फैसलों को रद कर दिया। कई कार्यकारी आदेशों पर हस्ताक्षर किए। उन्होंने कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका ऐतिहासिक पेरिस जलवायु समझौते से बाहर होगा। डोनाल्ड ट्रंप ने इस दौरान 6 जनवरी के कैपिटल दंगों में शामिल सभी लोगों को माफी दी।

ऑस्ट्रेलियन ब्रॉडकॉस्टिंग कारपोरेशन की रिपोर्ट के अनुसार, ट्रंप ने 6 जनवरी के कैपिटल दंगों में शामिल सभी लोगों को माफ कर दिया है। उन्होंने जेल अधिकारियों को दंगों से संबंधित सभी कैदियों को तुरंत रिहा करने का आदेश दिया। राष्ट्रपति के रूप में ओवल कार्यालय दोबारा लौटते ही ट्रंप ने सबसे पहला कार्य विद्रोह में शामिल लगभग 1,500 लोगों को क्षमा करने के आदेश पर हस्ताक्षर किए। उन्होंने 14 अन्य लोगों की सजा की अवधि भी कम कर दी। साथ ही इन लोगों को भी तत्काल रिहा करने का आदेश दिया। रिहा होने वालों में धुर दक्षिणपंथी प्राउड बॉयज और ओथ कीपर्स समूहों के नेता और सदस्य शामिल हैं।

सीबीएस न्यूज की खबर के अनुसार, राष्ट्रपति डोनाल्ड टंप ने ऐतिहासिक पेरिस जलवायु समझौते से संयुक्त राज्य अमेरिका को निकालने की घोषणा की। खबर में कहा गया है कि इससे ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के दुनिया भर के प्रयासों को झटका लगना तय है। ट्रंप ने देश की बागडोर संभालने के बाद घोषणा की कि अमेरिका पेरिस समझौते को छोड़ देगा। उन्होंने कहा कि पेरिस जलवायु समझौते पर अमेरिका को शामिल करने का फैसला अनुचित था। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र को अपने फैसले से अवगत कराते हुए एक पत्र पर भी हस्ताक्षर किए।

हमारी प्राथमिकता देश को गौरवान्वित, समृद्ध और स्वतंत्र बनाना

अपने भाषण के शुरुआत में ट्रंप ने कहा, अमेरिका का स्वर्ण युग अब शुरू हुआ है। अमेरिका फर्स्ट की नीति के साथ वो फिर से देश को आगे लेकर जाएंगे। हम अपनी संप्रभुता बनाए रखेंगे। दुनिया हमारा इस्तेमाल नहीं कर सकेगी। अमेरिका में अब घुसपैठ नहीं होगा। उन्होंने कहा, हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता एक ऐसा राष्ट्र बनाना होगा जो गौरवान्वित, समृद्ध और स्वतंत्र हो।

ट्रंप ने 11 देशों में मचाई खलबली, भारत-चीन भी लपेटे में

वॉशिंगटन। राष्ट्रपति पद की कुर्सी पर बैठते ही डोनाल्ड ट्रंप का एक्शन शुरू हो गया है। ट्रंप ने ब्रिक्स देशों को खुलेआम धमकी दे दी है। उन्होंने कहा कि स्पेन समेत ब्रिक्स देशों पर 100 प्रतिशत टैरिफ लगाया जा सकता है। ब्रिक्स में दस देश शामिल हैं। ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका, मिस्र, इथियोपिया, इंडोनेशिया, ईरान और संयुक्त अरब अमीरात। स्पेन ब्रिक्स का हिस्सा नहीं है। बावजूद वह भी ट्रंप के रडार में है। हालांकि, दिसंबर में ही डोनाल्ड ट्रंप ने इसका इशारा कर दिया था कि वह ब्रिक्स देशों पर 100 फीसदी टैरिफ लगाएंगे। हालांकि, उन्होंने इसके लिए एक शर्त रखी थी। सोमवार को जब डोनाल्ड ट्रंप ने शपथ ली, तब उन्होंने अपनी पुरानी धमकी को दोहरा दिया। उन्होंने साफ-साफ शब्दों में ब्रिक्स देशों को धमकी दे दी। भारत और अमेरिका के बीच कारोबार काफी अधिक होता है। आंकड़ों की मानें तो अभी भारत और अमेरिका के बीच सबसे अधिक व्यापार हो रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो अमेरिका, भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। भारत और अमेरिका के बीच द्विपक्षीय कारोबार 2023-24 में 118.3 अरब डॉलर रहा। वहीं साल 2021-22 और 2022-23 के दौरान भारत का शीर्ष व्यापारिक भागीदार अमेरिका ही था। मगर वित्तीय वर्ष 2023-24 में भारत का सबसे बड़ा कारोबारी साथी बदल गया। अमेरिका की जगह चीन ने ले ली। चीन 118.4 अरब डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार के साथ भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बनकर उभरा है। हालांकि, अब भी भारत का चीन के बाद अमेरिका ही सबसे बड़ा कारोबारी साथी है। डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि अगर ब्रिक्स देश अमेरिका विरोधी नीतियां लाते हैं तो उन्हें अंजाम भुगतने को तैयार रहना होगा। वे फिर कभी खुश नहीं रह पाएंगे। डोनाल्ड ट्रंप ने दिसंबर महीने में भी कहा था कि अगर ब्रिक्स देशों ने अमेरिकी डॉलर को कमजोर करने की कोशिश में नई करेंसी लाई तो अमेरिका उन पर 100 फीसदी का टैरिफ लगाएगा। ट्रंप ने कहा था, अगर ब्रिक्स देश ब्रिक्स करेंसी बनाते हैं या डॉलर के मुकाबले दूसरी करेंसी का समर्थन करते हैं तो 100 फीसदी टैरिफ देना होगा और अमेरिका में अपने सामान को बेचने से अलविदा कहना होगा। कोई चांस नहीं कि ब्रिक्स अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अमेरिकी डॉलर की जगह ले। डोनाल्ड ट्रंप की इस धमकी का मतलब है कि भारत भी इसके लपेटे में आएगा। भारत ब्रिक्स का अहम सदस्य है। ट्रंप का बयान इसलिए भी अहम है, क्योंकि कुछ समय पहले यह खबर आई थी कि ब्रिक्स देश अपनी नई करेंसी पर विचार कर रहे हैं। हालांकि, उस पर अब तक कोई आधिकारिक बयान नहीं है। अगर ट्रंप की धमकी सही साबित होती है तो ब्रिक्स देशों के लिए बड़ी मुसीबत होगी। ऐसे में भारत के लिए भी अमेरिका से आयात-निर्यात करना बहुत कठिन हो जाएगा।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने शपथ ग्रहण के बाद पहला बड़ा फैसला लेते हुए देश के दक्षिणी सीमा पर नेशनल इमरजेंसी की भी घोषणा की। उन्होंने कहा कि मेक्सिको बॉर्डर पर दीवार बनाई जाएगी। संगठित अपराध के खिलाफ आज से ही काम शुरू होगा। उन्होंने कहा कि घुसपैठ रोकने के लिए जरूरत पड़ी तो वहां सेना को भी भेजा जाएगा। ट्रंप ने कहा कि अवैध प्रवासियों को वहीं छोड़कर आएंगे जहां से वो आए हैं।

अपनी सरकार की प्राथमिकता को बताते हुए ट्रंप ने कहा कि उनकी पहली प्राथमिकता घुसपैठ को रोकना है ताकि देश की जनता सुरक्षित महसूस करे। दूसरी प्राथमिकता महंगाई पर रोक लगाना है ताकि लोगों को जरूरी सामानों के लिए अतिरिक्त बोझ न पड़े।

फिलाडेल्फिया कॉरिडोर पर कब्जा चाहता है इजराइल, समझौते के तहत हटना होगा

तेल अवीव

इजराइल-हमास के बीच युद्ध विराम शुरू हो गया है। पिछले 15 महीनों से चल रही लड़ाई यह एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है। कतर, मिस्र और अमेरिका के प्रयासों से यह समझौता सफल हुआ है। इसके तहत कई चरणों में हमास की ओर से बंधकों की रिहाई होगी। वहीं इजराइल भी जेलों में बंद फिलिस्तीनी कैदियों को रिहा करेगा। पहले चरण में हमास की ओर से 33 बंधकों को छोड़ा जाएगा। इसके अलावा राहत सामग्री वाले 600 ट्रक और 50 ईंधन टैंकर हर रोज गाजा जाएंगे, लेकिन युद्धविराम की शर्तों में फिलाडेल्फिया कॉरिडोर से वापसी भी शामिल है। यह ऐसी जगह है, जिसे नेतन्याहू नहीं छोड़ना चाहते।

फिलाडेल्फिया कॉरिडोर राफा क्रॉसिंग समेत मिस्र और गाजा की सीमा के बीच 14 किमी लंबी और 100 मीटर चौड़ी पट्टी है। 2005 में गाजा से इजराइली सैनिकों की वापसी के बाद एक विसैन्यीकृत सीमा के रूप में नामित किया था। यह भूमध्य सागर तक जाती है। मिस्र के साथ इजराइल की 1979 कैंप डेविड संधि ने गलियारे में सीमित संख्या में सैनिकों को तैनात करने की इजाजत दी थी। इजराइल के बाद यह फिलिस्तीनी प्राधिकरण की जिम्मेदारी थी 2007 में हमास की ओर से गाजा पर नियंत्रण करने तक मिस्र ने यहां 750 पुलिसकर्मी तैनात कर रखे थे ताकि तस्करी को रोका जा सके। मई में इजराइल ने पिछले साल इस कॉरिडोर पर कब्जा कर लिया था।

1979 कैंप डेविड संधि ने गलियारे में सीमित सैनिक तैनाती की इजाजत दी थी

पहले जब भी युद्धविराम की चर्चा में फिलाडेल्फिया कॉरिडोर से हटने की बात आती तो इजराइल नहीं मानता था, लेकिन अब के समझौते में इजराइली रक्षा बल चरणबद्ध तरीके से नेटजारिम कॉरिडोर और फिलाडेल्फिया कॉरिडोर से वापसी करेगी। इन क्षेत्रों में आईडीएफ की मौजूदगी धीरे-धीरे कम होगी। 50वें दिन फिलाडेल्फिया कॉरिडोर से इजराइली सेना पूरी हट जाएगी। इसके बाद मिस्र राफा क्रॉसिंग की सुरक्षा की जिम्मेदारी लेगा। फिलाडेल्फिया कॉरिडोर कब्जाने का प्लान पहले से ही नेतन्याहू के दिमाग में था। पिछले साल जनवरी में ही उन्होंने गाजा-मिस्र सीमा को कंट्रोल करने का इरादा जताया था।

गाजा की सीमा दो तरफ से इजराइल से घिरी है। वहीं एक तरह भूमध्य सागर है। मिस्र के साथ गाजा की सीमा हमास के लिए किसी लाइफलाइन से कम नहीं है। गाजा में घातक हथियारों की तस्करी हमास इसी रास्ते करता रहा है। यहां पर इजराइल कब्जा करना चाहता है।

यूक्रेनी सैनिकों ने खेरसॉन क्षेत्र के गांव में दो रॉकेट दागे, 21 लोग घायल

जेनिचेस्क। यूक्रेनी सशस्त्र बलों ने सोमवार को खेरसॉन क्षेत्र के बेख्तेरी गांव पर एचआईएमएआरएस मल्टीपल लॉन्च सिस्टम के जरिए दो रॉकेट दागे हैं। इस हमले में 21 लोग घायल हुए हैं। गवर्नर के प्रेस सचिव वलोडिमीर वासिलेंको ने इस घटना की पुष्टि की है। वासिलेंको ने बताया कि बताया कि हमला स्थानीय स्कूल परिसर को निशाना बनाकर किया गया, जिसमें तीन बच्चों समेत 21 लोग घायल हुए। हमले के तुरंत बाद राहत और बचाव कार्य शुरू कर दिया गया। स्थानीय प्रशासन ने घायल लोगों को नजदीकी अस्पतालों में पहुंचाने के लिए एंबुलेंस और चिकित्सा दल को मौके पर तैनात किया। सचिव वासिलेंको ने कहा, 卐यह हमला निर्दोष नागरिकों पर किया गया है, जो अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानूनों का उल्लंघन है। हमले के बाद क्षेत्र में सुरक्षा बढ़ा दी गई है और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए कड़े कदम उठाए जाएंगे।

बांग्लादेश के सुंदरबन में एक साथ दिखे 3 बाघ

ढाका

बांग्लादेश के सुंदरबन के कोटका वन्यजीव अभयारण्य में पर्यटकों ने एक साथ तीन बाघों को देखा। इस दौरान दो बाघों ने तीसरे पर हमला कर उसे नदी में धकेल दिया। पर्यटकों ने अभयारण्य के बेटमोर क्षेत्र के इस वाकये को रविवार दोपहर कैमरे में कैद कर लिया।

ढाका ट्रिब्यून के अनुसार, गाइड एमडी अल अमीन ने बताया कि पर्यटकों ने सुंदरबन से लौटते समय इन बाघों (दो नर और एक मादा) को देखा। दो बाघ कोटका कार्यालय क्षेत्र से आए थे और एक बाघ उनके साथ शामिल होने के लिए बेटमोर नदी पार कर गया था। बेटमोर क्षेत्र से आए बाघ पर अन्य दो बाघों ने हमला किया और उसे नदी में धकेल दिया।

कोटका वन्यजीव अभयारण्य केंद्र के अधिकारी एमडी सोहैबुर रहमान सुमन ने इसकी पुष्टि की है। उन्होंने कहा कि 15 जनवरी को

कोटका वन गश्ती दल के सदस्यों ने कोटका-कोचिखली सीमा के बादामतला क्षेत्र में चार बाघों को देखा था। उनमें से दो वयस्क और दो शावक थे। पिछले साल फरवरी में चंदेश्वर वन कार्यालय के पास तीन बाघ एक साथ देखे गए थे।

वन विभाग के अनुसार, सुंदरबन का बांग्लादेशी हिस्सा 6,017 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है। इसमें 4,832 वर्ग किलोमीटर जंगल और 1,185 वर्ग किलोमीटर आर्द्रभूमि है। 2015 की गणना में सुंदरबन में 106 बाघ दर्ज किए गए थे। 2018 में यह संख्या बढ़कर 114 हो गई। 2024 में गणना में इनकी संख्या बढ़कर 125 पहुंच गई। अधिकारियों के अनुसार, सुंदरबन के चार रेंजों में से शरणखोला में बाघों की संख्या सबसे अधिक है।

धरती की ये पांच जगहें जिन्हें कहते हैं नरक का द्वार

लंदन

धरती पर नरक ये शायद सिर्फ एक मुहावरा नहीं है। लेकिन ये सच हैं क्योंकि दुनिया में कुछ ऐसी भी जगहें हैं, जिन्हें नरक का द्वार या पाताल लोक जाने का रास्ता कहा जाता है। वैज्ञानिकों का भी ऐसा ही मानना है। इसमें से कुछ जगहें जैसे आइसलैंड का ज्वालामुखीय गड्ढा और एक पानी के नीचे की गुफा है। यहां शायद मानव बलि दी जाती थी हम दुनिया की ऐसी ही 5 जगहों के बारे में बताएंगे, जो अपने अद्भुत और रहस्यमयी पहलुओं के कारण नरक का द्वार के रूप में मशहूर हैं।

पहले नंबर पर गेहिन्ना न्यू टेस्टामेंट में नरक का ग्रीक शब्द है। इसका नाम हिब्रू शब्द गे-हिन्नोम (हिन्नोम की घाटी) से आया है। प्राचीन काल में यह स्थान अमोनाइट देवता मोलोक को

प्रसन्न करने के लिए बच्चों की बलि देने के लिए मशहूर था। इस घाटी में शवों को जलाने की प्रथा ने यहूदी और ईसाई धर्म में नरक की आग की अवधारणा को जन्म दिया। यह माना जाता है कि मरने के बाद जिन लोगों को सम्मानजनक अंतिम संस्कार नहीं मिलता था, उनकी आत्माओं को इस स्थान पर फेंक दिया जाता था। यह स्थान आज भी प्राचीन ग्रंथों में वर्णित धरती के नरक की सच्ची तस्वीर पेश करता है।

दूसरे नंबर पर आइसलैंड का हेक्ला ज्वालामुखी, यह ज्वालामुखी प्राचीन काल से नरक का प्रवेशद्वार माना जाता है। 1104 में इसके विस्फोट ने आधे आइसलैंड को राख और पत्थरों से ढक दिया था। मध्यकालीन ईसाई इस बर्फ से ढके पहाड़ को नरक की चिमनी कहते थे। यह माना जाता था कि इसके नीचे पाताल लोक छिपा हुआ है। तीसरे नंबर पर तुर्किए के प्राचीन ग्रीक शहर हिएरापोलिस में एक गुफा है, इसे प्लूटो का द्वार कहा जाता है। प्राचीन कहानियों के अनुसार, गुफा में बलि दिए गए जानवर जैसे ही प्रवेश करते थे, तुरंत मर जाते थे। लेकिन विज्ञान ने साबित किया है कि यह गुफा ज़हरीली कार्बन डाइऑक्साइड गैस से भरी हुई है, जो जानवरों और छोटे पक्षियों को मार देती हैं। यह स्थान एक प्रकार की गैस चैम्बर जैसा है, इसे नरक का दरवाजा कहा जाता है।

चौथे नंबर पर आयरलैंड के सेंट पैट्रिक्स पुर्गेटरी को कभी दुनिया के छोर के रूप में जाना जाता था। बताया जाता हैं कि ईसा मसीह ने सेंट पैट्रिक को इस गुफा को दिखाया, ताकि वह लोगों को ईसाई धर्म अपनाने के लिए प्रेरित करे। यहां एक छोटी गुफा थी, जहां धुएं में सांस लेने से आध्यात्मिक जागृति मानी जाती थी। इस कहानी ने पश्चिमी यूरोप में पुर्गेटरी (पुनर्जन्म से पहले की यातना) की धारणा को एक भौतिक रूप दिया।

पांचवी और आखिर बेलीज में यह गुफा पत्थर की समाधि की गुफा के नाम से जानी जाती है। माया सभ्यता के अनुसार, यह ज़िबाल्बा नामक पाताल लोक का प्रवेशद्वार है। यहां 4 साल के बच्चों सहित बलि चढ़ाए गए कई लोगों के कंकाल मिले हैं। कई कंकाल कैल्सियम से ढके हुए हैं, जो इन्हें चमकदार बनाते हैं। माया सभ्यता में प्राकृतिक आपदाओं को रोकने इन बलिदानों को आवश्यक माना जाता था।

चीन ने फिर की पाक की बेइज्जती, कहा- खैरात में दिया एयरपोर्ट

बीजिंग। चीन की तरफ से पाकिस्तान को दिए गए नए ग्वादर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उड़ानें शुरू हो गई हैं। एक ओर जहां पाकिस्तान इसे चीन के साथ दोस्ती करार दे रहा है। वहीं, बीजिंग ने इसे महज दान बताया है। जबकि पाकिस्तान के पीएम शहबाज शरीफ ने इसे पाकिस्तान और चीन की दोस्ती का उदाहरण बताया। उन्होंने कहा, हमने ग्वादर को मिडिल ईस्ट और खाड़ी के देशों को मध्य और पूर्वी देशों को जोड़ने का एक मील का पत्थर पार कर लिया है। इधर, सीसीपी यानी चाइनीज कम्युनिस्ट पार्टी के मुखपत्र माने जाने वाले अखबार ने इसे डोनेशन करार दिया है। रिपोर्ट के अनुसार, चीन की तरफ से अनुदान के रूप में तैयार और फंड किए गए नए ग्वादर इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर संचालन शुरू हो गया है। रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान के दक्षिण पश्चिम बलूचिस्तान प्रांत में स्थित एयरपोर्ट पर सोमवार को पहली फ्लाइट पहुंची। पाकिस्तान इंटरनेशनल एयरलाइन्स की फ्लाइट ने सुबह 11.14 बजे लैंड किया था।